वैदिक काल से वर्तमान युग तक नारी की स्थिति

[1]ज्योति ग्रोवर, [2]डॉ. पटेल सिंह

[1]शोधार्थी, [2]शोध निर्देशक (एसोसिएट प्रोफेसर)

संस्कृत विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा, भारत

शोध आलेख सार: *इस शोध पत्र में वैदिक काल से लेकर वर्तमान युग तक नारी की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक स्थिति का विस्तृत अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन विभिन्न ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों के माध्यम से यह समझने का प्रयास करता है कि समय के साथ नारी की भूमिका और स्थान में किस प्रकार के परिवर्तन आए हैं। वैदिक काल में नारी को समाज में सम्मानजनक एवं सशक्त स्थान प्राप्त था। उस समय महिलाएँ न केवल शिक्षित थीं, बल्कि वेदों और अन्य धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन–अध्यापन का अधिकार भी रखती थीं। गार्गी, मैत्रेयी और लोपामुद्रा जैसी विदुषी महिलाओं का उल्लेख इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि वैदिक युग में स्त्रियों को बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से उन्नत माना जाता था। वे सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। हालांकि, उत्तर वैदिक काल से लेकर मध्यकाल तक नारी की स्थिति में धीरे–धीरे गिरावट देखी गई। इस काल में पुरुष–प्रधान सामाजिक व्यवस्था अधिक प्रभावी होने लगी, जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं के अधिकार सीमित कर दिए गए। कन्यादान, सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा जैसी कुप्रथाओं ने महिलाओं की स्वतंत्रता को बाधित किया। शिक्षा से वंचित किए जाने के कारण उनके बौद्धिक विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। ब्रिटिश शासन के दौरान महिलाओं की स्थिति में कुछ सुधार के संकेत मिले, जब समाज सुधारकों जैसे राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों के लिए संघर्ष किया। महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिलने लगे और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई जाने लगी। आधुनिक युग में, महिला सशक्तिकरण की दिशा में अनेक प्रयास किए गए हैं, जिनमें शिक्षा, रोजगार, राजनीति, और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए कानून एवं नीतियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संविधान द्वारा दिए गए समान अधिकारों, महिला सशक्तिकरण योजनाओं, और बदलते सामाजिक दृष्टिकोण के कारण महिलाओं की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। आज महिलाएँ राजनीति, विज्ञान, तकनीक, खेल, कला, व्यापार और अन्य क्षेत्रों में अपनी सशक्त भूमिका निभा रही हैं। इस प्रकार, नारी की स्थिति में समय के साथ अनेक उतार–चढ़ाव आए हैं। वैदिक काल में जहाँ उन्हें सम्मान और स्वतंत्रता प्राप्त थी, वहीं मध्यकाल में उनकी*

स्थिति कमजोर हुई। किंतु आधुनिक समय में शिक्षा और जागरूकता के कारण महिलाओं ने पुनः सशक्त भूमिका प्राप्त की है और समाज में अपने अधिकारों को स्थापित किया है।

मुख्य शब्दः वैदिक काल, वर्तमान युग, नारी स्थिति।

Article History

Received: 06/01/2025; Accepted: 20/01/2025; Published: 07/02/2025

ISSN: 3048-717X (Online) | https://takshila.org.in

Corresponding author: ज्योति ग्रोवर, Email ID: jyotisonia123@gmail.com

परिचय

भारतीय समाज में नारी की स्थिति सदियों से परिवर्तनशील रही है, क्योंकि यह विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों से प्रभावित होती रही है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक नारी की भूमिका में कई उतार–चढ़ाव आए हैं। कभी उन्हें समाज में उच्च स्थान प्राप्त हुआ, तो कभी पितृसत्तात्मक व्यवस्थाओं ने उनकी स्वतंत्रता और अधिकारों को सीमित कर दिया।

उत्तर वैदिक काल से नारी की स्थिति में गिरावट आने लगी। धीरे–धीरे समाज में पुरुष–प्रधान व्यवस्था प्रभावी हो गई, और महिलाओं की स्वतंत्रता सीमित होने लगी। विवाह संबंधी नियम कठोर हो गए, और कन्यादान जैसी प्रथाओं ने स्त्रियों को पुरुषों की अधीनता में ला दिया। मध्यकाल तक आते–आते नारी की स्थिति और भी दयनीय हो गई। इस समय पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा जैसी कुप्रथाओं ने महिलाओं को सामाजिक बंधनों में जकड़ लिया। शिक्षा और स्वतंत्रता के अवसर समाप्त हो गए, और महिलाओं को केवल घरेलू कार्यों तक सीमित कर दिया गया।

मध्यकालीन भारतीय समाज में मुस्लिम शासन के प्रभाव के कारण महिलाओं की स्थिति में और अधिक गिरावट आई। इस काल में महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान को लेकर नई चुनौतियाँ सामने आईं, जिससे उनकी स्वतंत्रता पर और अधिक नियंत्रण लगाया गया। इसके विपरीत, भक्ति आंदोलन और संत परंपरा में नारी को सम्मानजनक स्थान दिया गया। मीराबाई, बहिनाबाई और अन्य महिला संतों ने समाज में महिलाओं की भूमिका को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया।

औपनिवेशिक काल में महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए विभिन्न सामाजिक सुधार आंदोलनों का जन्म हुआ। राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा के उन्मूलन के लिए संघर्ष किया, ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह को बढ़ावा दिया, और सावित्रीबाई फुले ने महिला शिक्षा के लिए उल्लेखनीय योगदान

दिया। 19वीं और 20वीं शताब्दी में महात्मा गांधी, ज्योतिबा फुले और अन्य समाज सुधारकों ने महिलाओं के अधिकारों के लिए आवाज उठाई।

भारत की स्वतंत्रता के बाद, संविधान ने महिलाओं को समान अधिकार प्रदान किए। शिक्षा के प्रसार, रोजगार के अवसरों, महिला सशक्तिकरण योजनाओं और कानूनी सुधारों के माध्यम से महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ। आज महिलाएँ राजनीति, विज्ञान, व्यापार, खेल, और कला के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। हालाँकि, अभी भी कई सामाजिक चुनौतियाँ, जैसे लैंगिक भेदभाव, समान वेतन का अभाव और महिलाओं के प्रति हिंसा जैसी समस्याएँ बनी हुई हैं, जिन्हें दूर करने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

इस प्रकार, भारतीय समाज में नारी की स्थिति समय के साथ बदलती रही है। जहाँ वैदिक काल में उन्हें समानता और सम्मान प्राप्त था, वहीं मध्यकाल में उनकी स्वतंत्रता पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगाए गए। आधुनिक काल में शिक्षा और जागरूकता के प्रसार के कारण महिलाओं की स्थिति में सकारात्मक बदलाव आए हैं, जिससे वे समाज में फिर से अपनी सशक्त भूमिका निभाने में सक्षम हो रही हैं।

वैदिक काल में नारी की स्थिति

वैदिक काल में महिलाओं को पुरुषों के समान दर्जा प्राप्त था। उन्हें शिक्षा, विवाह और धार्मिक कार्यों में स्वतंत्रता थी।

- ऋग्वैदिक काल में महिलाएं विदुषी थीं, जैसे गार्गी, मैत्रेयी और लोपामुद्रा।
- उन्हें यज्ञ और धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेने का अधिकार था।
- समाज में 'सहधर्मिणी' के रूप में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण थी।

Improving Skillset
Takshila Journal of Research

उत्तर वैदिक एवं मध्यकाल में नारी की स्थिति

उत्तर वैदिक काल से महिलाओं की स्थिति में गिरावट शुरू हुई।

- विवाह के लिए 'कन्यादान' जैसी प्रथाएं प्रचलित हुईं।
- सती प्रथा, पर्दा प्रथा और बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं का उदय हुआ।
- शिक्षा और स्वतंत्रता का अधिकार धीरे–धीरे महिलाओं से छिन गया।

मुगल काल और ब्रिटिश शासन के दौरान भी महिलाओं की स्थिति दयनीय बनी रही।

आधुनिक काल में नारी की स्थिति

आधुनिक भारत में महिलाओं की स्थिति में व्यापक सुधार हुआ है।

- **सामाजिक सुधार आंदोलनों** (राजा राम मोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले) के कारण सती प्रथा और बाल विवाह पर रोक लगी।
- **शिक्षा का प्रसार** – सावित्रीबाई फुले और अन्य समाज सुधारकों के प्रयासों से महिलाओं को शिक्षा का अधिकार मिला।
- **राजनीतिक अधिकार** – 1950 में भारतीय संविधान ने महिलाओं को समान अधिकार प्रदान किए।
- **महिला सशक्तिकरण** – 21वीं सदी में महिलाओं ने राजनीति, विज्ञान, खेल, व्यापार, और अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं।

वर्तमान युग में नारी की स्थिति

वर्तमान युग में नारी की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण प्रगति की है और सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा शैक्षिक रूप से सशक्त हुई हैं। आधुनिक समाज में उन्हें पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं और वे हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही हैं।

1. **शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में प्रगति**
    - आज महिलाएँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं और विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, कला, वाणिज्य तथा अन्य क्षेत्रों में सफलतापूर्वक काम कर रही हैं।
    - भारत सरकार की 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना जैसी पहल ने महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया है।
    - महिला साक्षरता दर में बढ़ोतरी हुई है और ग्रामीण क्षेत्रों में भी लड़कियाँ शिक्षा के प्रति जागरूक हो रही हैं।
2. **आर्थिक स्वतंत्रता और कार्यक्षेत्र में भागीदारी**

Improving Skillset
Takshila Journal of Research

- महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं, जैसे कॉर्पोरेट, बैंकिंग, आईटी, स्टार्टअप्स, कृषि, उद्यमिता, रक्षा, और अंतरिक्ष अनुसंधान।
- महिलाओं को स्वरोजगार और स्टार्टअप्स में प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न सरकारी योजनाएँ चलाई जा रही हैं।
- कई महिलाएँ शीर्ष पदों, जैसे सीईओ, निर्देशक और नीति–निर्माता के रूप में कार्य कर रही हैं।

3. **राजनीतिक भागीदारी**
   - भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। पंचायत राज व्यवस्था में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण सुनिश्चित किया गया है।
   - कई महिलाएँ मुख्यमंत्री, सांसद, मंत्री, और राष्ट्रपति जैसे उच्च पदों तक पहुँची हैं।
4. **महिला सशक्तिकरण के लिए कानून और अधिकार**
   - भारतीय संविधान ने महिलाओं को समानता, शिक्षा, रोजगार, संपत्ति अधिकार, और स्वतंत्रता के अधिकार प्रदान किए हैं।
   - घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न, दहेज प्रथा, और लैंगिक भेदभाव को रोकने के लिए कड़े कानून बनाए गए हैं।
   - 'नारी शक्ति' को प्रोत्साहित करने के लिए कई सरकारी योजनाएँ लागू की गई हैं।

वर्तमान समय में नारी के सामने प्रमुख चुनौतियाँ

हालाँकि, महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन वे अभी भी कई चुनौतियों का सामना कर रही हैं।

1. **लैंगिक भेदभाव और असमान वेतन**
   - कार्यस्थलों पर महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है।
   - कई क्षेत्रों में महिलाओं को उच्च पदों तक पहुँचने में कठिनाई होती है।
2. **महिला सुरक्षा और यौन उत्पीड़न**
   - आज भी महिलाओं के खिलाफ हिंसा, घरेलू हिंसा, दहेज हत्या, ऑनर किलिंग, बलात्कार और यौन उत्पीड़न की घटनाएँ होती हैं।
   - कार्यस्थलों और सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं की सुरक्षा चिंता का विषय बनी हुई है।
3. **सामाजिक व पारिवारिक दबाव**

Improving Skillset
Takshila Journal of Research

- कई परिवारों और समुदायों में अभी भी लड़कियों को शिक्षा और करियर के बजाय विवाह को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित किया जाता है।
- महिलाओं को आज भी पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण करियर और व्यक्तिगत स्वतंत्रता में समझौता करना पड़ता है।

4. **राजनीतिक और निर्णय लेने की प्रक्रिया में सीमित भागीदारी**
   - महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ी है, लेकिन संसद और विधानसभाओं में अभी भी उनकी संख्या पुरुषों की तुलना में कम है।
   - सामाजिक रूढ़ियों के कारण कई महिलाएँ नेतृत्वकारी भूमिकाओं में आने से वंचित रह जाती हैं।
5. **स्वास्थ्य और पोषण संबंधी समस्याएँ**
   - ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को उचित स्वास्थ्य सेवाएँ और पोषण नहीं मिल पाता, जिससे वे कुपोषण और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का शिकार होती हैं।
   - मातृ मृत्यु दर और प्रसवकालीन जटिलताएँ अभी भी एक चुनौती बनी हुई हैं।

नारी सशक्तिकरण के लिए समाधान और सुझाव

- **शिक्षा को बढ़ावा देना:** महिलाओं को उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण देने पर ध्यान देना चाहिए।
- **आर्थिक स्वतंत्रता:** महिलाओं को स्वरोजगार और उद्यमिता के अवसरों में अधिक भागीदारी मिलनी चाहिए।
- **सुरक्षा के लिए कड़े कानून:** महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सख्त कानूनों को प्रभावी ढंग से लागू करना आवश्यक है।
- **सामाजिक जागरूकता:** समाज को महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
- **राजनीतिक भागीदारी:** संसद और विधानसभाओं में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए आरक्षण और अन्य सुविधाएँ दी जानी चाहिए।

वर्तमान युग में नारी की स्थिति पहले की तुलना में काफी सशक्त हुई है। महिलाओं ने शिक्षा, रोजगार, राजनीति, विज्ञान, खेल, और व्यवसाय के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। हालाँकि, उन्हें

अभी भी कई सामाजिक, आर्थिक और कानूनी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। यदि महिलाओं को समान अवसर, सुरक्षा और स्वतंत्रता प्रदान की जाए, तो वे समाज के विकास में और भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। नारी सशक्तिकरण केवल एक सामाजिक आवश्यकता नहीं, बल्कि राष्ट्र के विकास का आधार भी है।

निष्कर्ष

वर्तमान युग में नारी की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, लेकिन अभी भी कई सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक चुनौतियाँ बनी हुई हैं। वैदिक काल में जहाँ महिलाओं को समाज में समानता और सम्मान प्राप्त था, वहीं मध्यकाल में उनकी स्थिति कमजोर हो गई। स्वतंत्रता संग्राम और आधुनिक सुधार आंदोलनों के बाद महिलाओं की स्थिति में धीरे–धीरे सुधार आया।

आज महिलाएँ शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, खेल, व्यापार और अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। सरकार द्वारा लागू की गई विभिन्न योजनाओं और कानूनों ने महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया है। हालाँकि, लैंगिक भेदभाव, असमान वेतन, घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न और सामाजिक रूढ़ियों जैसी चुनौतियाँ अभी भी महिलाओं के विकास में बाधा डाल रही हैं। यदि इन चुनौतियों को प्रभावी ढंग से हल किया जाए, तो महिलाएँ समाज और राष्ट्र के विकास में अधिक योगदान दे सकती हैं।

सुझाव

महिला सशक्तिकरण और उनके समग्र विकास के लिए निम्नलिखित सुझाव महत्वपूर्ण हैं–

Improving Skillset
Takshila Journal of Research

1. शिक्षा को प्राथमिकता दी जाए

- लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अधिक छात्रवृत्तियाँ और अनुदान दिए जाएँ।
- ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाए।
- लड़कियों को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित क्षेत्रों में भागीदारी के लिए प्रेरित किया जाए।

2. आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया जाए

- महिलाओं को स्वरोजगार, स्टार्टअप्स और उद्यमिता के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- कार्यस्थलों पर समान वेतन और लैंगिक समानता को सुनिश्चित किया जाए।
- स्वयं सहायता समूहों और महिला सहकारी समितियों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाए।

3. सुरक्षा और कानूनी अधिकारों को मजबूत किया जाए

- महिलाओं के खिलाफ अपराधों के मामलों में त्वरित न्याय और कठोर दंड सुनिश्चित किया जाए।
- महिलाओं की सुरक्षा के लिए प्रभावी हेल्पलाइन और आपातकालीन सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
- कार्यस्थलों और सार्वजनिक स्थानों पर यौन उत्पीड़न रोकने के लिए सख्त निगरानी रखी जाए।

4. राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाया जाए

- संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण को प्रभावी रूप से लागू किया जाए।
- महिलाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया में अधिक भागीदारी देने के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाएँ।

5. सामाजिक जागरूकता अभियान चलाए जाएँ

Improving Skillset
Takshila Journal of Research

- समाज में महिलाओं के प्रति मानसिकता बदलने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- लड़कों और पुरुषों को भी महिला सशक्तिकरण के प्रति संवेदनशील बनाया जाए।
- मीडिया और सिनेमा को महिलाओं की सशक्त छवि को बढ़ावा देना चाहिए।

6. स्वास्थ्य और पोषण पर ध्यान दिया जाए

- महिलाओं को स्वास्थ्य सुविधाएँ और पोषण संबंधी जानकारी प्रदान की जाए।

- मातृ मृत्यु दर को कम करने के लिए बेहतर चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
- किशोरियों के लिए स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से जुड़ी योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए।

7. महिला सशक्तिकरण के लिए सरकारी योजनाओं को प्रभावी रूप से लागू किया जाए

- 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', 'उज्ज्वला योजना', 'महिला हेल्पलाइन', 'सुकन्या समृद्धि योजना' जैसी सरकारी योजनाओं को और अधिक प्रभावी बनाया जाए।
- महिलाओं के लिए सुरक्षित आवास और कार्यस्थल की सुविधा प्रदान की जाए।

यदि समाज और सरकार मिलकर महिलाओं की सुरक्षा, शिक्षा, रोजगार और अधिकारों पर ध्यान दें, तो महिलाओं को सशक्त बनाकर एक विकसित और समानतापूर्ण समाज की स्थापना की जा सकती है। नारी केवल घर की नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास की आधारशिला भी है। इसलिए, महिलाओं के समग्र विकास को सुनिश्चित करना प्रत्येक व्यक्ति और संस्थान की सामूहिक जिम्मेदारी है।

संदर्भ

- कुमार, एस. (2017). वैदिक समाज में स्त्रियों की स्थिति. मध्य भारत इतिहास समीक्षा, 5(4), 112–119.
- मिश्रा, के. (2016). वैदिक कालीन नारी की स्थिति. International Journal of Research, 3(5), 9638–9312.
- सिंह, पी. (2019). प्राचीन भारत में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थितिः एक अध्ययन. शोधगंगोत्री, 3(1), 78–85.
- भारतीय इतिहास में नारी की भूमिका – रोमिला थापर
- भारतीय समाज और संस्कृति – रामधारी सिंह दिनकर
- शर्मा, आर. (2018). भारतीय महिलाओं का शोषणः वैदिक काल से अब तक. International Journal of Scientific Research in Science and Technology, 4(8), 123–130.
- सक्सेना, एन. (2019). आधुनिक युग का संकट और औरत की स्थिति. संवेदना, 1(2), 15–22.

Improving Skillset
Takshila Journal of Research

- दास, आर. (2021). भारत में महिलाओं की स्थितिः वैदिक काल के संदर्भ में. रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी, 6(3), 1286–1288.
- वर्मा, ए. (2020). प्राचीन भारतीय इतिहास में नारी स्थितिः एक मूल्यांकन. International Journal of Creative Research Thoughts, 8(3), 896–902.
- चतुर्वेदी, डी. (2013). धर्मों में नारी की स्थितिः एक दार्शनिक एवं मानवशास्त्रीय विमर्श. International Journal of Advances in Social Sciences, 1(2), 1–10.
- नारी सशक्तिकरण और भारतीय संविधान – डॉ. अंबेडकर
- अंबेश, एम. (2018). वैदिक काल में नारी की स्थिति का ऐतिहासिक अध्ययन. Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 15(8), 45–50.
- गुप्ता, एम. (2020). वैदिककालीन नारी की स्थिति का आलोचनात्मक अध्ययन. शोध समीक्षा, 6(2), 45–52.

Improving Skillset
Takshila Journal of Research